ISSN 2278-8808 SJIF 2015: 5.403
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

"विनम्रता" एक सामाजिक जीवन मूल्य

S. K. Pundir, Ph. D.

Associate Professor, Dept. of Education, Meerut College Meerut

Abstract

श्रीरामचरितमानस, तुलसीदास जी द्वारा रचित अद्वितीय ग्रंथ है, जिसमें जीवन के समस्त मूल्यों का समावेश है। इन सभी मूल्यों को हमारे पीढ़ी दर पीढ़ी चलती आ रही परम्पराओं नियमों और उप नियमों ने निर्मित किया है, जिसका वर्णन हमारे वेद पुराणों में समय–समय पर मिलता रहता है। उन्हीं में से एक जीवन मूल्य है विनम्रता। विनम्रता एक ऐसा जीवन मूल्य है, जो हर तरह की परिस्थिति में मनुष्य का उद्धार करता है। श्रीरामचरितमानस में विनम्रता हमें समय–समय पर देखने को मिलती है, विशेष तौर पर भगवान श्रीराम तो विनम्रता की प्रतिमूर्ति है। वे ताड़का वध से अहंकार नहीं करते है। वे मन्त्री सुमंत्र को भी तात् कह कर संबोधित करते हैं। हम विनम्रता से बड़े से बड़ा युद्ध होने से रोक सकते हैं और आज के समय में जो घर परिवार टूटते बिखरते जा रहे हैं, अगर हम विनम्रता का प्रयोग करेंगे, तो घर परिवार और समाज का विघटन होने से बच जायेगा।

मुख्य बिन्दुः *विनम्रता, मूल्य, प्रभाव।*

Scholarly Research Journal's ***is licensed Based on a work at*** *www.srjis.com*

प्रस्तावना :

गोस्वामी जी कहते है कि मनुष्य के अन्दर विनम्रता एक ऐसा गुण है, जो हमारे दूसरे अन्य गुणों को ऊभरने का मौका देता है। **महात्मा गाँधी** कहते थे कि "सत्य की खेती की जा सकती है, साथ ही साथ प्रेम की भी। लेकिन विनम्रता की खेती नहीं की जा सकती, क्योंकि वह मूल गुणों में से ही एक है।" **विवेकानन्द जी** ने कहा कि हिंदू धर्म में "प्रत्येक मानव सार्वभौमिक है, सभी को इस ब्रह्मांड में सब कुछ बिना किसी हीनता या श्रेष्ठता या किसी अन्य पूर्वाग्रह के साथ एकता को पहचानना और महसूस करना विनम्रता का प्रतीक है"। विनम्रता का मतलब यह नहीं है कि आप अपने आप को पापी कहे और दूसरे इंसान को बेवजह अच्छा कहें। **डॉ0 एस0 राधाकृष्णन** "हिंदू धर्म में विनम्रता एक गैर

न्यायिक स्थिति है, जब हम हर किसी के बारे में और सभी चीजों को सीखने, चिंतन करने और समझने में सक्षम होते हैं।" आध्यात्मिक शिक्षक **मेहर बाबा** ने कहा है कि "विनम्रता भक्ति जीवन की नींव में से एक है विनम्रता की वेदी पर हमें अपनी प्रार्थना भगवान को अर्पित करनी चाहिए।"

रामचरितमानस और विनम्रता

श्रीतुलसीदास जी कहते हैं कि विनम्रता में बहुत शक्ति होती है क्योंकि जो ईश्वर सर्वत्र रहता है जो माया से रहित है। निर्गुण है, सुख–दुख से दूर अजन्मा अजर–अमर है वही प्रेम और भक्ति के बस में हो कर माता कौशल्या की गोद में खेल रहे हैं।

"ब्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत बिनोद।
सो अज प्रेम भगति बस कौसल्या कें गोद।।" (1/198)

जब प्रभु श्री राम गुरू विश्वामित्र जी के यज्ञ की रक्षा के लिए जाते हैं और राक्षसों का संहार करते हैं और बहुत ही सरल तरीके से ताड़का और सुभाउ को मार देते हैं और मारीच को कई योजन पीछे फेंक देते हैं। इस सफलता के बाद भी उनको तनिक भी अहंकार नहीं होता बल्कि वह ब्राह्मणों से पुराणों की कथाएं ऐसे सुनते हैं, जैसे कोई छोटा बच्चा बड़ों से कहानियां सुनता है, जबकि प्रभु सर्व ज्ञाता हैं फिर भी उन्हें किसी बात का अहंकार नहीं है।

"तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया। रहे कीन्हि बिप्रन्ह पर दाया।।
भगति हेतु बहुत कथा पुराना। कहे बिप्र जद्यपि प्रभु जाना।।" (1/209/4)

गोस्वामी जी कहते हैं सीता स्वयंवर के समय जनकपुरी में जब श्री राम धनुष को तोड़ देते हैं और परशुराम जी वहाँ गुस्से से आते हैं और पूछते हैं, यह दुष्टता किसने की जो मेरे आराध्य का धनुष तोड़ दिया। इस पर श्री राम बहुत ही विनम्रता से बताते हैं कि हे भगवन इस धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई सेवक ही होगा।

"नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।" (1/270/1)

जब राजा दशरथ गुरु वशिष्ट की की सलाह पर श्री राम को युवराज बनाने का संदेश लेकर आते है। तो श्री राम सीता सहित गुरु के चरण वंदना करते हैं और दोनों हाथों को जोड़कर बोलते हैं हे देव! जो आज्ञा हो मैं वही करूंगा। **स्वामी की सेवा में ही सेवक का धर्म है।** यहाँ भगवान श्री राम अपने आप को गुरु और राजा का सेवक बताते हैं, यही तो सच्ची विनम्रता है ।

"प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू। भयउ पुनीत आजु यहु गेहू।।
आयसु होइ सो करौं गोसाईं। सेवकु लइह स्वामि सेवकाईं।। (2/8/4)

श्री राम की विनम्रता उस समय अपने चरम पर होती है, जब रानी केकैयी उनको कठोरता पूर्वक वन जाने के लिए कहती हैं। उस समय भी श्री राम एक शब्द नहीं कहते और रानी केकैयी से बोलते हैं कि महाराज तो बड़े ही धीर गंभीर और गुणों के सागर हैं। वे कभी गलत नहीं कर सकते मुझसे ही कुछ ना कुछ गलती हुई है आपको मेरी सौगंध है, माता मुझे सच सच बताओ।

"राउ धीर गुन उदधि अगाधू। भा मोहि तें कछु बड़ अपराधू।।
जातें मोहि न कहत कछु राऊ। मोरि सपथ तोहि कहु सतिभाऊ।।" (2/41/4)

श्रीतुलसीदास जी कहते हैं चित्रकूट में जब भरत श्री राम को वापस लाने के लिए जाते हैं तो गुरु वशिष्ट यह योजना बनाते हैं कि श्री राम और लक्ष्मण तो अयोध्या जाएं और भरत और शत्रुघ्न वन में ही रह जाएं उस समय भी भगवान श्री राम गुरु की आज्ञा मानने के लिए होते हैं और कहते हैं कि आपका जो विचार है आपकी जो आज्ञा है मैं उसको प्रसन्नता पूर्वक उसका पालन करूँगा क्योंकि वह सबको सबके हित के लिए होगी इसलिए भरत से पहले आप मुझे आज्ञा दीजिए आपकी आज्ञा को मैं अपने मस्तिष्क पर धारण करूँगा

"सब कर हित रुख राउरि राखें। आयसु किए मुदित फुर भाषें।।
प्रथम जो आयसु मो कहुँ होई। माथें मानि करौं सिख सोई।।" (2/257/2)

जब विभीषण भगवान श्रीराम से मिलते हैं तो अपने आप को कई तरीके से दीन–हीन बताते हैं। तो प्रभु राम उनकी इन बातों पर ध्यान नहीं देते हुए विनम्रता के साथ में उनकी प्रशंसा करते हैं और कहते हैं कि आप में तो सारे गुण विद्यमान हैं। इसलिए आप मुझे बहुत ही प्रिय लगते हो। मनोबल से गिरे हुए विभीषण के मन को शान्त करने के लिए प्रभु के यह वचन अमृत के समान सिद्ध हुए। रावण से युद्ध जीतने के उपरांत भगवान श्री राम अपनी समस्त वानर सेना को बुलाते हैं और विनम्रता से कहते हैं। हे! वानरों तुम्हारे ही बल और प्रयास से यह शक्तिशाली रावण मारा गया और इसके राज्य का अंत हुआ है और विभीषण को राज्य मिला है। हे वानरों इस दुनिया में संसार में जब भी मेरे नाम का गुणगान होगा। मेरे नाम के साथ–साथ आप सब के गुणों का भी गुणगान युगो–युगो तक रहेगा।

"सुनु लंकेस सकल गुन तोरें। तातें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें।।
राम बचन सुनि बानर जूथा। सकल कहहिं जय कृपा बरूथा।।" (5/48/1)

निश्कर्शः

श्रीरामचरितमानस में विनम्रता हमें समय–समय पर देखने को मिलती है विशेष भगवान श्रीराम तो विनम्रता का प्रयाय ही है। वह सुमंत्र को भी अपने पिता तुल्य तात कह कर संबोधित करते हैं। अगर हम विनम्रता का प्रयोग करेंगे तो घर परिवार और समाज का विघटन होने से बच जाएगा। विनम्रता हमारा वह गुण है जिस से हम अपनी सीमाओं के ज्ञान से बल और कमजोरियों को जानते है। विवेक और ज्ञान विनम्रता के ही गुण है और विनम्रता के अनुसार कार्य करते है।

"रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।।"

रहीम जी ने उपर्युक्त दोहे में पानी को तीन अर्थों में प्रयुक्त किया है। पहले अर्थ में पानी को मनुश्य के संदर्भ में 'विनम्रता' मूल्य से बताया है। वे कहते है कि मनुष्य में हमेशा विनम्रता (पानी) होना चाहिए। पानी का दूसरा अर्थ आभा, या चमक से बताया है, जिसके अभाव में मोती का कोई मूल्य नहीं। तीसरा अर्थ जल से है जिसे आटे (चून) से जोड़कर दर्शाया गया है। कविराज रहीम का कहना है कि आटे के बिना संसार का अस्तित्व नहीं

हो सकता, बिना आभा के मोती का मूल्य नहीं हो सकता है। ठीक उसी तरह विनम्रता के बिना व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं हो सकता। इसीलिए सभी मनुष्यों को अपने व्यवहार में हमेशा विनम्रता रखनी चाहिए।

आजकल समाज में चारों ओर द्वेश–भावना और लड़ाई–झगड़े का माहौल बना हुआ है। कभी ऊँच–नीच तो कभी जात–पात को लेकर झगड़े होते हैं। कभी–कभी तो परिवार के अन्दर आपस में ही लड़ाई–झगड़े चलते रहते है, जिनके कारण हमारा समाज और संयुक्त परिवार दिन–प्रतिदिन टूटते जा रहे हैं। अब भी यदि आधुनिक समाज को रामचरितमानस के मूल्यों का पाठ पढ़ाया जाए, तो समाज की बहुत सारी समस्याओं का निदान हो सकता है, क्योंकि रामचरितमानस के मूल्यों में समाज की हर समस्या का समाधान है, अगर कमी है तो हमारे अंदर हैं, जो हम अपने ग्रंथों के ज्ञान से दूर होते जा रहे हैं और समस्याओं को बढ़ा रहे है।

विनम्रता से मान–सम्मान बढ़ता है और अहम कम होता है, क्योंकि सकारात्मक सम्बन्ध से धनात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है। जबकि खराब हुए सम्बन्धों से हमारे मस्तिष्क पर नकारात्मक उर्जा का प्रभाव होने लगता है। उसके बाद वही प्रभाव बढ़ कर अभिमान का रूप धारण कर लेता है। इस अभिमान का दमन केवल विनम्रता ही द्धारा ही सम्भव होता है।

सन्दर्भ :

बालकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 198.
बालकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 209 चौ. 4.
बालकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 270, चौ. 1.
अयोध्याकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 8, चौ. 4.
अयोध्याकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 41, चौ 4.
अयोध्याकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 257 चौ 2.
सुन्दरकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 48 चौ 1.
रहीम ग्रंथावली (पृष्ठ 100)